UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 10 आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान ने विश्व भर में ज्ञान का प्रकाश फैलाया, इनका जन्म सन् 982 ई० में सहोर (बंगाल) में हुआ था। ये विक्रमपुर के राजा कल्याण के दूसरे पुत्र थे। इन्हें बचपन में चन्द्रगर्भ कहते थे। इन्होंने आगे चलकर विवाह तथा सिंहासन स्वीकार नहीं किया। उनतीस वर्ष की अवस्था तक ज्ञान की सभी शाखाओं का अध्ययन कर इन्होंने 'महापंडित' की उपाधि प्राप्त की। वज्रासन महाविहार (बुद्ध गया) में उन्हें दीपंकर श्रीज्ञान के नाम से विभूषित किया गया।

इन्होंने भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया। ये तीन वर्ष के लिए तिब्बत गए थे, परन्तु सीमा पर लड़ाई छिड़ने के कारण भारत वापस न लौट सके। वर्षों तक बौद्ध मत का प्रचार-प्रसार करने तथा अनेक ग्रन्थों की रचना करने के पश्चात् तिहत्तर वर्ष की अवस्था में वहीं इनका निधन हो गया। ये शान्ति, सद्भाव और आपसी सहयोग के प्रतीक थे।

https://www.evidyarthi.in/